जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 15 संख्याः 122 प्रभात हिण्डौन सिटी, शुक्रवार 3 मार्च, 2023 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

जैसे-जैसे ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ रही है, वैज्ञानिक यह पता लगा रहे हैं कि दुनिया भर में जानवरों की हीट स्ट्रैस (गर्मी का तनाव) सहन करने की क्षमता कितनी है। ट्रॉपिकल (उष्ण कटिबंधीय) प्रजातियों को लेकर खासकर ज्यादा चिंता है। लेकिन अब अपनी तरह के पहले अध्ययन में युनिवर्सिटी ऑफ इलिनॉय के वैज्ञानिकों ने बताया है कि, समशीतोष्ण (टैम्परेट) एवं उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में रहने वाले पक्षियों की हीट स्ट्रैस सहन करने की क्षमता, पूर्व में जितनी सोची गई थी, उससे अधिक है। शोध के प्रथम लेखक हैनरी पोलॉक ने कहा, ''ये पक्षी रोजमर्रा में जितनी गर्मी का अनुभव करते हैं उससे कहीं ज्यादा तापमान सहने की क्षमता है इनमें। यह आश्चर्यजनक है क्योंकि ट्रॉपिकल एक्टोथर्म्स, जैसे कीट आदि, क्लाइमेट वॉर्मिंग के प्रति बहुत ज्यादा संवेदनशील पाए गए हैं, लेकिन पक्षियों में हम यह नहीं देख रहे हैं। यह बात उत्साहवर्धक है। शोध से संकेत मिलता है कि, ट्रॉपिकल पक्षी गर्माती पृथ्वी से अनुकूलन कर सकते हैं और जीवित रह सकते हैं, पर तेजी से बदलते पर्यावरण पर इनकी क्या प्रतिक्रिया होगी यह कहना अभी जल्दबाजी होगी।'' शोध के सह लेखक जैफ ब्राउन ने कहा, गर्म होती जलवायु ट्रॉपिकल बड्र्स के संसाधनों व जंगल की संरचना को प्रभावित कर इन पक्षियों को नुकसान पहुंचा रही है। शोध में पनामा और साऊथ कैरोलाइना की 81 पक्षी प्रजातियों पर फोकस किया गया और फील्ड लैब में इनका सामना बढ़ते तापमान से करवाया। शरीर का आंतरिक तापमान और मैटाबॉलिक रेट नापने के लिए वैज्ञानिकों ने सूक्ष्म सैंसर्स का इस्तेमाल किया। साऊथ कैरोलाइना में रहने वाले पक्षियों ने गर्मी से, जितनी उम्मीद थी, उससे भी बेहतर तरीके से डील किया। सभी प्रजातियों में, चित्र में नज़र आ रही फाख्ता व कबूतरों में सबसे ज्यादा हीट रैज़िस्टैंस पावर पाई गई, क्योंकि ये पसीना निकाल सकते हैं। पोलॉक ने कहा कि, ये पक्षी जांच की सीमा भी पार कर गये। पक्षियों का यह पहला भौगोलिक तुलनात्क अध्ययन है।

जो कभी कांग्रेस की छत्र छाया में पैदा हुए और बढ़े थे, वही कांग्रेस को ले डूबे

नॉर्थ-ईस्ट की तीन विधानसभाओं में भाजपा सरकार बनायेगी। दो में अपने दम पर और एक में सहयोगी पार्टियों के संग

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। अगर पूर्वोत्तर राज्यों के चुनाव-परिणामों में कोई सर्वसामान्य चीज नजर आ रही है तो वह यही है कि इन राज्यों, जहाँ कांग्रेस का एक छत्र साम्राज्य हुआ करता था, कांग्रेस के जनाधार का और भी क्षरण हुआ है, उसमें और भी कमी आई है।

एक अन्य सर्वसामान्य बात यह रही है कि पूर्वोत्तर में भाजपा ने स्वयं को एक अग्रणी राजनैनिक ताकत के रूप में स्थापित कर लिया है। उसने अपने दम पर या अन्य स्थानीय पार्टियों से गठबंधन करके, तीनों राज्यों में सरकार बनाने की क्षमता हासिल कर ली हैं।

भाजपा त्रिपुरा और नागालैंड़ में सरकार बना लेगी तथा मेघालय में, सबसे बड़ी पार्टी एन.पी.पी. ने सरकार बनाने के लिये भाजपा से समर्थन माँगा है। लेकिन भाजपा को अपनी असफलताओं को भी ध्यान में रखना होगा। उसे मेघालय में केवल दो सीटें मिली हैं, जबकि उसने राज्य की सभी सीटों पर चुनाव लड़ा था। त्रिपुरा में भाजपा कुछ सीटों पर एक नई पार्टी से हार गई है।

विडम्बना देखिये कि कांग्रेस को हुआ नुकसान उन लोगों के पक्ष में गया है जो कभी इस शानदार अतीत वाली पार्टी में फले-फूले थे।

त्रिपुरा में, कांग्रेस को हुये नुकसान का लाभ एक नई पार्टी ''तिपरा मोथा'' को मिला है, जो पूर्व कांग्रेसी प्रद्योत देब बर्मा के नेतृत्व वाली मुख्यत: जनजातीय पार्टी है। देब बर्मा पूर्व राज-परिवार के सदस्य भी हैं।

''तिपरा मोथा'' ने भाजपा के भी कुछ वोट काटे है। तथा सत्तारूढ़ पार्टी की कुछ सीटें छीनी हैं। देखना यह कि यह नई पार्टी आगमी दिनों में किस तरह विकसित होती है।

मेघालय राज्य विधान सभा में कांग्रेस की सदस्य संख्या लुप्त प्राय: स्थिति में पहुँच गई है। पिछली बार, कांग्रेस ने 21 सीटें जीती थी तथा राज्य विधान सभा की सबसे बड़ी पार्टी थी। इस बार इसकी केवल 5 सीटें रह गई हैं। मुख्यत: करीब आधे कांग्रेसी विधायकों द्वारा सामूहिक रूप से दल बदल कर तृणमूल में जाने से पार्टी बरबाद हो गई थी। चुनाव से पहले अपने दौरे में, राहुल गांधी को यह स्थिति साफ नज़र आ गई थी तथा इसलिये उन्होंने टी.एम.सी. तथा उसकी आदतन करतूतों पर जबरदस्त प्रहार किये थे। यह बात एकदम साफ है कि टी.एम.सी. का एजेंड़ा कांग्रेस को कुतरने का तथा उसे निष्प्रभावी बना देने का है ताकि कांग्रेस भाजपा के खिलाफ किसी भी स्थिति में राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष का नेतृत्व करने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तृणमूल खुद तो सफल नहीं हो पाई, पर कांग्रेस को जरूर ले डूबी।
- चुनाव से पूर्व नॉर्थ-ईस्ट के अपने दौरे में तृणमूल की भूमिका भांपते हुए, राहुल गांधी ने तृणमूल व उसकी भूमिका को बहुत कोसा था।
- तीसरे उल्लेखनीय बात यह है कि, वामपंथी दल (मार्क्सवादी पार्टी) का भी लगभग सफाया हो गया, हालांकि उसने कांग्रेस के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ा था।

क्या आपको कम सुनाई देता है।
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
फ्री सुनाई की जाँच
TRIAL OF HEARING AID
CALL FOR APPOINTMENT
+91 94602 07080
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
www.perfecthearingsolutions.com

अडानी विवाद के लिए सुप्रीम कोर्ट ने पैनल बनाया

-जाल खंताबा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। सुप्रीम कोर्ट ने निवेशकों के हितों की सुरक्षा के उपायों पर सिफारिश देने और अडानी हिन्डनबर्ग विवाद की जांच के लिए अपने सेवानिवृत्त जज अभय मनोहर सप्रे की अध्यक्षता में

- सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज ए.एम. सप्रे की अध्यक्षता में गठित इस पैनल में पूर्व जस्टिस जे. पी. देवधर, नंदन नीलेकनी, के.वी. कामथ और सोमशेखर सुंदरासन बतौर सदस्य शामिल हैं।

गुरूवार को एक कमेटी का गठन किया। इस कमेटी में अपने-अपने कार्यक्षेत्रों के विशेषज्ञ के रूप में ओ.पी. भट, जस्टिस जे.सी. देवधर (सेवानिवृत्त), के.वी.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तमिलनाडू के उपचुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवार की 50,000 से अधिक वोटों से जीत

मु.मंत्री स्टालिन ने हुंकार भरी कि, यह विकास के ''द्रविड़ियन मॉडल'' की जीत है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। भाजपा और दूसरे मित्रों दलों को भले ही देशभर में चुनावी मोर्चे पर जीत मिल रही हो, लेकिन जब तमिलनाडु की बारी आती है तो उसकी विजय यात्रा अवरूद्ध हो जाती है और सम्भवत: यही कारण है कि वह तमिलनाडु में अपने गठबंधन पार्टनरों, विपक्षी दल ए.आई.ए. डी.एम.के. (अन्नाद्रमुक) को सम्बल एवं ऊर्जा प्रदान करने में असमर्थ रही है। ईरोड ईस्ट विधान सभा क्षेत्र के उपचुनाव में, डी.एम.के. (द्रमुक) समर्थित कांग्रेस आसानी से चुनाव जीत गई तथा इस विजय का तौर-तरीका दर्शाता है कि अन्नाद्रमुक उसके नये तथा एकमात्र नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री इडाप्पादी पलानी सामी और भाजपा मिलकर भी तमिल मतदाताओं को समझाने तथा उनका विश्वास जीतने में असफल रहे।

शुक्रवार को, मतगणना के तीसरे-चौथे राउण्ड तक ही, कांग्रेस उम्मीदवार की बढ़त की गति ने अन्नाद्रमुक में ऐसे बहुत से लोग थे, जो यह महसूस कर रहे थे कि पार्टी का भाजपा के साथ जुड़ाव उसे महँगा पड़ रहा है।

हालाँकि, अन्नाद्रमुक ने औपचारिक रूप से हिम्मत बाँध रखी है तथा इस जीत के लिये डी.एम.के (द्रमुक) पर धन-बल और बाहु-बल के दुरूपयोग का दोषारोपण किया है तथा अपने नुकसान का जिक्र नहीं किया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- डी.एम.के.-कांग्रेस गठबंधन इस ''द्रविड़ियन मॉडल'' का ढिंढोरा अगले लोकसभा चुनाव तक खूब पीटेगा।
- अन्नाद्रमुक-भाजपा गठबंधन की हार का कारण, अन्नाद्रमुक का भाजपा से मिलकर चुनाव लड़ने को माना जा रहा है, अन्नाद्रमुक पार्टी के कुछ नेताओं द्वारा भी।
- भाजपा में अब मंथन का समय आ गया है कि, देश भर में, उदाहरण के लिये नॉर्थ-ईस्ट में, भाजपा की भारी जीत हुई, पर तमिलनाडू के वोटर्स को भाजपा क्यों नहीं लुभा पाती।

'आई एम सॉरी पापा मम्मी मेरे से नहीं हो पाएगा'

लालसोट, (निसं)। उपखंड मुख्यालय स्थित एक निजी स्कूल इंपल्स की 10वीं में पढ़ने वाली छात्रा खुशबू मीणा ने गुरुवार को पढ़ाई के दबाव में आकर एक सुसाइड नोट लिख फांसी के फंदे पर लटककर जीवन लीला समाप्त कर ली।

छात्रा ने उस समय आत्म हत्या की जब उसकी माँ अपने छोटे बेटे की फीस जमा कराने उसके स्कूल गई हुई थी। मृतक छात्रा ने मरने से पहले एक सुसाइड नोट भी लिखा जिसमे उसने लिखा, ''आई एम सॉरी पापा मम्मी मेरे से नहीं हो पाएगा मैं दसवीं बोर्ड कर्क्षा में 95 प्लस नहीं बना पाऊंगी अब मुझसे और नहीं सहा जाता। आई लव यू पापा-मम्मी और ऋषभ'' अंत में खुशबू ने आई एम सो सॉरी लिखकर साइन किए। सुसाइट नोट घटना स्थल पर ही मिला। मृतका की मां जब लौटी तो नजारा देखकर बेसुध हो गई। घटना की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- 95 प्रतिशत से ज्यादा नम्बर लाने में असमर्थता जताते हुए दसवीं की छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या की।

चुनाव आयुक्त की नियुक्ति की वर्तमान प्रक्रिया का अंत

वर्तमान व्यवस्था के अनुसार प्र.मंत्री की सिफारिश पर राष्ट्रपति, मुख्य चुनाव आयुक्त व दो अन्य चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति करते हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। सुप्रीम कोर्ट ने एक अभूतपूर्व निर्णय के तहत देश के मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की वर्तमान में प्रधानमंत्री द्वारा की जाने वाली नियुक्ति की प्रणाली को गुरूवार को समाप्त कर दिया और व्यवस्था दी कि इन की नियुक्ति सी.बी.आई. प्रमुख की नियुक्ति की भांति एक पैनल द्वारा की जाए जिसमें प्रधानमंत्री, लोकसभा में विपक्ष के नेता और चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया (सी.जे.आई.) शामिल होते हैं। कोर्ट ने कहा कि इससे चुनावों की निष्पक्षता बनी रहेगी।

सुप्रीम कोर्ट की 5 जजों की एक संविधान पीठ ने सर्वानुमति से दिए गए एक फैसले में कहा कि देश के चुनावों पर निगरानी रखने वाले मुख्य चुनाव आयुक्त और दो चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति राष्ट्रपति की सलाह पर तीन सदस्यीय कमेटी द्वारा की जाएगी।

बैंच ने कहा कि ''चुनाव निश्चित रूप से निष्पक्ष होने चाहिए और इनकी पारदर्शिता सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी चुनाव आयोग की हैं।'' बैंच ने इस बात पर जोर दिया कि ''लोकतंत्र में चुनावों में पारदर्शिता जरूर होनी चाहिए अन्यथा इसके विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।''

वर्तमान व्यवस्था के तहत मुख्य चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रधानमंत्री की सिफारिश पर राष्ट्रपति द्वारा छह वर्ष

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर अपना निर्णय सुनाया कि, प्र.मंत्री, लोकसभा में विपक्ष के नेता व सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश का पैनल मुख्य चुनाव आयुक्त व चुनाव आयुक्तों के नाम निर्धारित करेगा।
- सुप्रीम कोर्ट ने यह आदेश सुनाते हुए यह भी कहा कि, इस नयी प्रक्रिया से देश में चुनाव की पवित्रता बरकरार रखी जा सकेगी।
- इस नयी प्रक्रिया का आदेश सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित पांच सदस्यीय कॉन्स्टिट्यूशन बैंच ने सर्वसम्मति से लिया।

रूस की कम्पनी को मिलेगा 200 वंदे भारत ट्रेन सप्लायी करने का ऑर्डर?

रूस की कम्पनी ने एक वंदे भारत ट्रेन 120 करोड़ रूपये में उपलब्ध कराने का ऑफर किया है, जबकि दूसरे नम्बर का ऑफर 140 करोड़ रूपये प्रति ट्रेन का है

-श्री नन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 जून। ऐसे समय में जबकि मास्को के साथ व्यापारिक लेनदेन कम करने को लेकर भारत पर दबाव रहता आया है, लगता है कि रेल इंजन और रेल उपकरण बनाने वाली रूस की सबसे बड़ी कम्पनी सी.जे.एस.सी. ट्रांसमैशहोल्डिंग का भारत के ट्रेन मार्केट में प्रवेश करना तय है। रूस की यह कम्पनी भारत सरकार के रेल विकास निगम लिमिटेड (आर.वी.एन.एल.) की साझेदारी में 58 हजार करोड़ रुपयों के करार के लिए सबसे कम बोली लगाने वाले रूप में उभरी है। वह 160 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से चलने वाली वंदे भारत ट्रेनों में 200 स्लीपर वेरिएन्ट्स का निर्माण करेगी। इन स्लीपर वेरिएन्ट्स का निर्माण लातूर, सोनीपत और चैन्नई स्थित रेलवे के कारखानों में करने की योजना है।

ट्रांसमैश होल्डिंग ने वन्दे भारत एक्सप्रैस की प्रत्येक ट्रेन के 16 कोचों के निर्माण के लिए अपने निविदा बिड में 120 करोड़ की कीमत दी। उसके विपरीत एल्सटम ने 160 करोड़ की बेसिक रेट दी, जबकि स्टैडलर-मेधा केन्सोर्टियम ने 170 करोड़ की प्राइस कोट की थी। दूसरे नम्बर के सबसे कम रेट के बोलीकर्ता भारत हैवी इलैक्ट्रिकलस लिमिटेड (बी.एच.ई.एल.) अर्थात भेल और टिटागढ़ वैगन्स के कन्सोर्टियम ने 140 करोड़ की बेसिक प्राइस दीया, निविदाएं गुरूवार को खोली गईं। निविदा शर्तों के अनुसार 120 ट्रेन्स के निर्माण और सप्लायी का ठेका सबसे कम रेट लगाने वाले बिडर को दिया जाना था।

चयनित बिडर्स को इन ट्रेनों का डिपो में रखरखाव करने का 35 वर्ष का ठेका दिया जाएगा। ये डिपो नई दिल्ली, मुम्बई, बैंगलुरू, जोधपुर, कोलकाता और हैदराबाद सहित विभिन्न स्थानों पर बनाए जाएंगे।

यदि प्रथम लोएस्ट बिडर (एल-1) द्वारा ऑफर की गई प्राइस दूसरे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- 120 ट्रेनों का ऑर्डर न्यूनतम रेट वाले आवेदक को मिलेगा तथा दूसरे नम्बर के आवेदक को 80 ट्रेन सप्लायी करने का मौका दिया जायेगा, पर उसे ये 80 ट्रेन न्यूनतम बिडर की रेट पर सप्लायी करनी होंगी।
- अगर नम्बर दो आवेदक, पहले नम्बर की बिडर की कीमत मैच नहीं कर पायेगा तो, अस्सी रेलगाड़ियों का ऑर्डर भी नम्बर वन बिडर को दे दिया जायेगा।

कांग्रेस ने सप्रे पैनल को ठुकराया

-जाल खंताबा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मार्च। कांग्रेस ने अडानी हिन्डनबर्ग विवाद पर सर्वोच्य न्यायालय द्वारा गठित पैनल को अस्वीकार कर दिया है तथा जॉइन्ट पालियामेन्ट्री कमेटी (जे.पी.सी.) द्वारा जाँच करये जाने पर जोर दिया है तथा गौतम अडानी को आगे बढ़ाने में प्रधानमंत्री का भूमिका सामने आ सके।

इसके महासचिव (मीडिया) जयराम रमेश ने कहा है कि गुरूवार को सर्वोच्य न्यायालय द्वार गठित किया गया पैनल केवल सेबी के नियम और कायदों के उल्लघंन की जांच करेगा तथा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लगातार पांचवीं बार नागालैण्ड के मु.मंत्री बनेंगे नेफियू रियो

नई दिल्ली, 2 मार्च। नागालैण्ड में भाजपा और एन.डी.पी.पी. गठबंधन ने बड़ी जीत हासिल की है। यहां गठबंधन को 37 सीटें हासिल हुई हैं। नागालैंड की राजनीति में मजबूत चेहरा कहे जाने वाले नेफियू रियो लगातार पांचवीं बार मुख्यमंत्री के रूप में पद ग्रहण करने के लिए तैयार हैं।70 वर्षीय नेफियू रियो ने इस जीत के साथ अनुभवी नेता एस सी जमीर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। जिन्होंने तीन बार पूर्वोत्तर राज्य का नेतृत्व किया था। नेफियू रियो ने कोहिमा जिले की उत्तरी अंगामी द्वितीय सीट से कांग्रेस के सेईविली साचू को 15,824 वोटो के अंतर से हराया है। उन्हें 17,045 वोट मिले, वहीं साचू को 1,500 से भी कम वोट से संतुष्ट होना पड़ा है। 11 नवंबर, 1950 को एक अंगामी नागा परिवार में जन्मे नेफियू रियो ने अपनी शुरुआती शिक्षा कोहिमा के बैपटिस्ट इंग्लिश स्कूल में प्राप्त की। और फिर पश्चिम बंगाल के सैनिक स्कूल, पुरुलिया में अध्ययन के लिए चले गए।